ISSN: 2277-7857

SJIF 2023 = 7.858

समकालीन हस्तक्षेप

साहित्य, समाज और संस्कृति की पीयर-रिव्यूड त्रैमासिक शोध-पत्रिका

वर्ष: 18, अंक: 1, जुलाई-सितंबर 2024

संपादक

डॉ. कपिल कुमार गौतम

वर्ष: 18, अंक: 1, जुलाई-सितंबर 2024

समकालीन हस्तक्षेप

साहित्य, समाज और संस्कृति की पीयर-रिव्यूड त्रैमासिक शोध-पत्रिका

'समकालीन हस्तक्षेप' त्रैमासिक शोध-पत्रिका में प्रकाशित शोध-पत्रों/ लेखों के माध्यम से व्यक्त किये गए विचार और स्थापनाएं लेखक के अपने हैं। उनके विचार और स्थापनाओं से संपादक मंडल अथवा प्रकाशक सहमत हों, यह जरुरी नहीं है। शोध-पत्रों/ लेखों में व्यक्त विचारों और स्थापनाओं के लिए सम्बन्धित लेखक स्वयं जिम्मेदार होंगे। विवाद की स्थिति में सभी मामले केवल भद्रक न्यायालय (उड़ीसा) के अधीन होंगे।

इस शोध-पत्रिका के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। समीक्षा, लेखों तथा शोध-पत्रों में उद्धरण के अतिरिक्त, प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश का अनुवाद, प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक माध्यम से पुनर्प्रकाशित नहीं किया जा सकता। केवल सम्बंधित शोध-पत्र के लेखक ही अपने शोध-पत्र को अकादमिक तथा व्यक्तिगत उपयोग करने हेतु निर्बाध रूप से स्वतंत्र होंगे।

© समकालीन हस्तक्षेप

वर्ष: 18, अंक: 1, जुलाई-सितंबर 2024

Published by

RESEARCH WALKERS
2nd Floor, Rout Niwas, Kuansh,
Near Town Police Station, Bhadrak,
Odisha, India – 756100

E-mail: hastakshep@hotmail.com

WhatsApp Us: +91 94311 09143

Website: www.hastakshep.co.in

www.facebook.com/hastakshep

www.instagram.com/hastakshep

संपादक मंडल

संपादक

डॉ. कपिल कुमार गौतम
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
संघटक राजकीय महाविद्यालय, मीरापुर, बांगर, बिजनौर,
एम.जे.पी. रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश

प्रबंध-संपादक

शेषनाथ वर्णवाल
मैनेजिंग पार्टनर, रिसर्च वॉकर्स,
रॉउत निवास, नियर टाउन पुलिस स्टेशन,
कुआंश, भद्रक, ओडिशा

उप-संपादक

डॉ. अलका धनपत
पूर्व-विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग,
स्कूल ऑफ़ इंडियन स्टडीज़, महात्मा गाँधी इंस्टिट्यूट,
यूनिवर्सिटी ऑफ़ मॉरीशस, मॉरीशस

डॉ. रजनी बाला अनुरागी
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, राजिंदर नगर,
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. मोहन लाल चढ़ार
विभागाध्यक्ष,
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग,
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,
अमरकंटक, मध्य प्रदेश

डॉ. दीनानाथ
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
सीएमपी डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

संपादक मंडल सदस्य

डॉ. प्रदीप कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग,
सत्यवती कॉलेज, अशोक विहार
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. राहुल सिद्धार्थ
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन
विश्वविद्यालय, साँची, मध्य प्रदेश

डॉ. प्रवीण कटारिया
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,
मेरठ, उत्तर प्रदेश

डॉ. हंसा दीप
लेक्चरार हिंदी, भाषा अध्ययन विभाग,
यूनिवर्सिटी ऑफ़ टोरंटो, किंग्स कॉलेज सर्किल,
टोरंटो, ओंटारियो, कनाडा

डॉ. विपिन कुमार शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग, बिष्ट राजकीय महाविद्यालय,
श्रीदेव सुमन विश्वविद्यालय, लंबगांव,
टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड

डॉ. उमाशंकर कौशिक
असिस्टेंट प्रोफेसर, योग शास्त्र
के.जे. सोमैया इंस्टिट्यूट ऑफ़ धर्मा स्टडीज,
सोमैया विद्या विहार विश्वविद्यालय,
पूर्वी मुंबई, महाराष्ट्र

डॉ. अनीश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. विकास कुमार पाठक
समन्वयक, अनुवादिनी फाउंडेशन,
अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्, उच्चतर
शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

डॉ. शरद पंडरीनाथ सोनवने
असिस्टेंट प्रोफेसर (अतिथि), पालि प्राकृत
विभाग, कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत
विश्वविद्यालय, रामटेक, नागपुर

डॉ. प्रतीक सागर
असिस्टेंट प्रोफेसर, आर्ट एंड डिजाईन विभाग,
शारदा स्कूल ऑफ़ डिजाईन, आर्किटेक्चर एंड
प्लानिंग, शारदा यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नॉएडा

डॉ. अवधेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर (अतिथि), हिंदी विभाग,
डॉक्टर हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
सागर, मध्य प्रदेश

डॉ. सुनीता गुरुंग
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. लेखराम सेलोकर
पी-एच. डी. (बौद्ध अध्ययन)
आनंद बुद्ध विहार, समता नगर,
नागपुर, महाराष्ट्र

डॉ. लोकेश चौधरी
असिस्टेंट प्रोफेसर, योग विज्ञान विभाग,
श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय,
निंबाहेड़ा, चित्तौड़गढ़, राजस्थान

डॉ. अमित कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय,
राजा गार्डन, नई दिल्ली

डॉ. आमिर खान अहमद
असिस्टेंट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग,
हरी-गायत्री दास महाविद्यालय, गुवाहाटी
विश्वविद्यालय, गुवाहाटी, असम

डॉ. संदीप कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, फैकल्टी ऑफ़ लीगल स्टडीज,
मदरहूड विश्वविद्यालय, रूडकी, उत्तराखंड

डॉ. प्रत्युष प्रशांत
पी-एच.डी., सेंटर फॉर वीमेंस स्टडीज,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

अनुक्रम

वर्ष: 18, अंक: 1, जुलाई-सितंबर 2024

सम्पादकीय

1.	राष्ट्रीय आंदोलन की दृष्टि से प्रेमचंद का संपादकीय साहित्य	रजत सिंह, डॉ. अमृता	9-14
2.	उत्पाद तथा सेवाओं के प्रति उपभोक्ता जुड़ाव और जागरूकता में मोशन ग्राफ़िक्स का प्रभाव	मुनीर अहमद अंसारी, डॉ. अंशु श्रीवास्तव	15-19
3.	कामायनी में व्यक्त पर्यावरण चिंतन	डॉ. दीपक सिंह	20-24
4.	शहडोल जिले के अंतरा गाँव से ज्ञात कलचुरी कालीन प्रतिमाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. मोहन लाल चढ़ार, नागेन्द्र शुक्ला	25-36
5.	आदिवासी जन-जीवन पर आधुनिकीकरण का प्रभाव : झारखंड राज्य के विशेष संदर्भ में	डॉ. राज कुमार	37-42
6.	राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना: भारत की नीतिगत दशा और चुनौतियाँ	निशा, डॉ. अभय कुमार	43-47
7.	वैदिक वाङ्मय में उत्तम राष्ट्र का प्रतिरुप	डॉ. विकास आर्य	48-53
8.	'अकाल में उत्सव' उपन्यास: एक किसान की दुःख भरी दास्तान	मोनिका धाकड़, डॉ. राहुल सिद्धार्थ	54-59
9.	कुमारजीव के बहाने सामाजिक राजनीतिक चिन्तन	डॉ. अनुज कुमार शुक्ल	60-64
10.	समकालीन हिंदी ग़ज़ल साहित्य में व्यंग्य परंपरा	कृष्ण कुमार, प्रो. राम कृष्ण	65-71
11.	भारतेंदुयुगीन दुखांत नाटक	रोहित आर्य	72-75
12.	दलित साहित्य के प्रतिमान का स्वरुप	अतुल कुमार	76-79
13.	अस्मितामूलक विमर्श को रेखांकित करती हिंदी दलित स्त्रीवाद की कविताएँ	रेखा अहिरवार, डॉ. दीनानाथ	80-84
14.	वर्तमान भारतीय राजनीति में व्याप्त विकृतियाँ	डॉ. अशोक कुमार	85-89
15.	महिलाओं की सामाजिक-राजनीतिक स्थिति का अवलोकन : वैदिक काल से मौर्य काल तक	डॉ. पंकज कुमारी	90-94
16.	किशोरों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं आक्रामकता में संबंध का अध्ययन	डॉ. अवंतिका कौशिल	95-97
17.	हिंदी गज़ल की जनवादी परम्परा में ‘दुष्यंत कुमार’ विशेष सन्दर्भ : *साये में धूप* (गज़ल संग्रह)	डॉ. राजाराम बनर्जी	98-102
18.	मानव अधिकारों की वैश्विक पृष्ठभूमि: भारतीय परिप्रेक्ष्य में जागरूकता के सुझावात्मक उपकरण	डॉ. सुबोधकान्त नायक	103-106
19.	लालबत्ती की अमृतकन्याएँ : वेश्याओं की अस्मिता, अस्तित्व और मुक्ति की पड़ताल	विवेक कुमार साव	107-112

20.	समकालीन हिंदी कहानी में अभिव्यक्त महानगरों का पर्यावरण-विमर्श	प्रो. क्षमा मिश्रा, जगदीश प्रजापति	113-116
21.	ट्रांसजेंडर समुदाय की एक अनसुनी दास्तां : 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास के सन्दर्भ में	डॉ. रवीन्द्र कुमार यादव	117-121
22.	असग़र वजाहत के नाटकों में राजनीतिक चेतना	गरिमा सिंह	122-126
23.	समकालीन चुनौतियाँ और हिन्दी कविता का युवा स्वर	डॉ. यज्ञेश कुमार	127-131
24.	दिव्यांग विमर्श और छत्तीसगढ़ की महिला हिंदी कहानीकार	डॉ. चंद्रिका चौधरी	132-136
25.	आचार्य रामचंद्र शुक्ल के द्वारा कबीर और निर्गुण संतों पर लगाये गये लोकधर्म विरोधी आरोपों का आलोचनात्मक विश्लेषण	हरिओम, प्रो. चंदा बैन	137-141
26.	महादेवी वर्मा के काव्य का मूल्यांकन	डॉ. मदन पाल	142-147
27.	लोक, लोक कला एवं लोक देवता सूर्य	श्वेता सिंह	148-152
28.	संस्कृत साहित्य की नाट्यशास्त्रीय भाषा : एक विमर्श	डॉ. सुनील मुर्मू	153-159
29.	राष्ट्र निर्माण में स्वातन्त्र्योत्तर पत्रकारिता की भूमिका	डॉ. प्रवीण कटारिया	160-162
30.	गीताश्री का संगीत प्रेम	हेमलता, प्रो. शर्मिला सक्सेना	163-167
31.	हीरा प्रसाद ठाकुर के काव्य में आधुनिकता बोध	श्री कृष्ण यादव, प्रो. सुधारानी सिंह	168-171
32.	मनरेगा में महिलाओं की भूमिका का एक मूल्यांकन	बिरेन्द्र सिंह, डॉ. धीरेंद्र प्रताप सिंह	172-176
33.	दिनेश कुशवाह की कविता में इतिहास-बोध	डॉ. मोती लाल	177-181
34.	स्वतंत्रता पूर्व की साहित्यिक पत्रकारिता और राष्ट्रीय संघर्ष	डॉ. मीनाक्षी गुप्ता	182-185
35.	कालजयी बनारस के कालजयी साहित्यकार	डॉ. कामना पण्ड्या	186-193
36.	पर्यावरण संरक्षण के लिए पर्यावरणीय नैतिकता की आवश्यकता	ललित कुमार	194-198
37.	राष्ट्रबोध के सामयिक मायने और धूमिल की कविता	डॉ. कृष्णबलदेव सिंह राठौड़	199-202
38.	श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में व्यक्त ग्रामीण समाज	अनुज कुमार रावत	203-206
39.	स्वयं प्रकाश की कहानियों में अभिव्यक्त मानवीय संवेदना (विशेष सन्दर्भ : 'नन्हा क़ासिद' कहानी-संग्रह)	घनश्याम कुमार भारती	207-211
40.	हिन्दी भाषा और संस्कृति का महत्व	रमन, डॉ ब्रजलता शर्मा	212-214

सम्पादक की कलम से...

कलम के बेबाक सिपाही कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की जयंती 31 जुलाई को मनाई जाती है। शायद ही कोई ऐसा कोई व्यक्ति होगा, जिसने प्रेमचंद के द्वारा लिखित किसी भी विधा की, किसी भी रचना को पढ़ा हो और प्रेमचंद ने उसे अपने प्रभाव से अछूता जाने दिया हो। प्रेमचंद की कलम जहाँ भी चली, सभी को प्रभावित करते हुए निकल गयी। सामान्यत: जब हम प्रेमचंद के बारे में पढ़ते हैं तो, उनके लेखन के संदर्भ में सबसे ज्यादा जो शब्द प्रयोग होता है वो है- 'आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद'। प्रेमचंद का मूल्यांकन सीमाओं में बांध कर नहीं किया जाना चाहिए लेकिन प्रेमचंद के विचारों को केवल 'आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद' शब्द की परिधि के अंदर देखना, उनको एक सीमित दायरे में समेटने जैसा है।

लेकिन अगर आदर्श और यथार्थ के आईने में भी प्रेमचंद को देखा जाये तो वहाँ भी आपको दो अलग-अलग प्रेमचंद दिखाई देंगे। जब प्रेमचंद के कथा साहित्य को पढ़ा जाता है तो प्रेमचंद यथार्थ से आदर्श की तरफ बढ़ते हैं तो वहीं समसामयिक विषयों पर लिखे हुए वैचारिक आलेखों में उनको आदर्श से यथार्थ की तरफ चलते हुए देखा जा सकता है। प्रेमचंद अपनी कहानी और उपन्यासों में समाज के यथार्थ को दिखाते हैं। सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याओं को दिखाते हैं और उसके बाद समस्याओं का समाधान देते हुए रचना के अंत में एक आदर्श की स्थापना करते हैं। लेकिन वैचारिक आलेखों में वो समाज में स्थापित आदर्शों पर बात शुरू करते हैं और अंत तक उस आदर्शवादी व्यवस्था के यथार्थ को स्पष्ट कर देते हैं। अधिकतर कहानी या उपन्यासों में यथार्थ तो दिखता है लेकिन उसी कहानी या उपन्यास में प्रेमचंद के पात्र व्यवस्था के साथ समझौता करते हुए देखे जा सकते हैं, या फिर ये मान लिया जाए कि व्यवस्था से समझौता करना ही हमारे समाज का यथार्थ है। तभी यथार्थ दिखाते हुए उनकी कथा की परिणति आदर्श के रूप में हो जाती है। लेकिन जब प्रेमचंद वैचारिक आलेख लिखते हैं तो वहाँ ना तो वे आदर्श को समस्या मानने से झिझकते हैं, ना ही समस्या के साथ समझौता करते हैं, और ना ही वो समाधान देने से पीछे हटते हैं।

जब उनकी कहानियों पर लोगों को आपत्ति हुई और विरोध में आलेख लिखे गए, उनके खिलाफ नारे-बाजी हुई, तो उन्होंने अपने एक लेख में, यहाँ तक कह दिया कि "वैसे तो मैं कहानियों में और भी बुरा लिख सकता हूँ लेकिन मुझे अपनी जान की भी परवाह है।" उनकी इस बात से, ये स्पष्ट होता है कि कथा साहित्य में जो सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ प्रेमचंद दिखाते हैं, उसमें भी कुछ छूट भी जाता है और जिसकी पूर्ति उन्होंने अपने आलेखों, संपादकीयों और निबंधों में की है। आज के दौर में रामराज्य और राष्ट्रवाद जैसे शब्द बहुत प्रचलित हैं, इन्हीं शब्दों के संदर्भ में 27 नवंबर 1933 के 'जागरण' पत्र के संपादकीय में प्रेमचंद लिखते हैं- "राष्ट्रीयता वर्तमान युग का कोढ़ है, उसी तरह जैसे मध्यकालीन युग का कोढ़ सांप्रदायिकता थी। नतीजा दोनों का एक है। सांप्रदायिकता अपने घेरे के अंदर पूर्ण शांति और सुख का राज्य स्थापित कर देना चाहती थी, मगर उस घेरे के बाहर जो संसार था, उसको नोचने-खसोटने में उसे जरा भी मानसिक क्लेश न होता था। राष्ट्रीयता भी अपने परिमित क्षेत्र के अंदर रामराज्य का आयोजन करती है। उस क्षेत्र के बाहर का संसार उसका शत्रु है।" यदि प्रेमचंद वर्तमान समय में यह बात कह रहे होते तो, शायद देशद्रोही मान लिए जाते। लेकिन प्रेमचंद ने ऐसे छद्म और फर्जी राष्ट्रवादियों के लिए 8 जनवरी 1934 के 'जागरण' पत्र के संपादकीय में लिखा- "राष्ट्रीयता की पहली शर्त है, समाज में साम्य-भाव का दृढ़ होना। इसके बिना राष्ट्रीयता की कल्पना नहीं की जा सकती। जब तक यहाँ एक दल, समाज की भक्ति, श्रद्धा, अज्ञान और अंधविश्वास से अपना उल्लू सीधा करने के लिए बना रहेगा; तब तक हिन्दू समाज कभी सचेत न होगा।" इसी में आगे प्रेमचंद के कहते हैं कि "हम जिस राष्ट्रीयता का स्वप्न देख रहे हैं उसमें तो जन्मजात वर्णों की गंध तक न होगी, वह हमारे श्रमिकों और श्रमिकों का साम्राज्य होगा, जिसमें न कोई ब्राह्मण होगा, न हरिजन, न कायस्थ, न क्षत्रिय। उसमें सभी भारतवासी होंगे, सभी ब्राह्मण होंगे, या सभी हरिजन होंगे।"प्रेमचंद ने राष्ट्रीयता के आदर्श को परिभाषित करने के साथ ही अपनी दृष्टि में राष्ट्रवाद के स्वरूप को भी स्पष्ट किया है।

सन 1934 में 'भारत' पत्र में ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' का एक आलेख प्रकाशित हुआ, जिसमें उन्होंने प्रेमचंद की कहानियों पर आपत्ति दर्ज की थी, कि "आज से पचास साल बाद जो प्रेमचंद की रचनाएँ पढ़ेंगे, उनके सामने हिन्दू समाज का कैसा चित्र होगा वो लोग हिन्दू समाज से विरक्त हो जायेंगे।" ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' की आपत्ति के जवाब में प्रेमचंद ने 8 जनवरी 1934 के 'जागरण' पत्र के संपादकीय में लिखा- "साहित्य अपने समाज का इतिहास होता है, इतिहास से कहीं अधिक सत्य। इसमें शरमाने की बात आवश्य है कि हमारा हिन्दू समाज क्यों ऐसा गिरा हुआ है और क्यों आंखे बंद करके धूर्तों को अपना पेशवा मान रहा है और क्यों हमारी

जाति का एक अंग पाखंड को अपनी जीविका का साधन बनाए हुए हैं, लेकिन शरमाने से तो काम नहीं चलता। इस अधोगति की दशा सुधार करना है।“ प्रेमचंद के उक्त विचारों से स्पष्ट हो जाता है कि कहानी और उपन्यासों में उनके पात्र जरूर समस्याओं से समझौता करते हुए दिखाई देते हैं, लेकिन प्रेमचंद अपने विचारों में समझौते के पक्ष में नहीं हैं। बल्कि दृढ़ता के साथ परिवर्तन की बात करते हैं। प्रेमचंद के लेखन पर बहुत से प्रश्नचिन्ह भी लगाए जाते हैं लेकिन प्रेमचंद स्वयं इतिहास के वाहक हैं। उनके साहित्य के साथ इतिहास के कई पक्ष देखे जा सकते हैं। जहाँ इतिहास को प्रेमचंद के बिना देखने का प्रयत्न होता है वहीं पर गरीब, मजदूर, दलित, स्त्री और समाज के सभी उपेक्षित वर्ग पीछे छूट जाते हैं। प्रेमचंद कल, आज और कल पूरी तरह प्रासंगिक हैं। उनके नजरिए से समाज को देखने, समझने और सुधारने की आवश्यकता है।

(डॉ. कपिल कुमार गौतम)

समकालीन हस्तक्षेप
साहित्य, समाज और संस्कृति की पीयर-रिव्यूड त्रैमासिक शोध-पत्रिका

SJIF 2023 = 7.858, **ISSN:** 2277-7857
वर्ष: 18, **अंक:** 1, जुलाई - सितंबर 2024
ई-मेल: issn22777857@gmail.com
वेबसाइट: www.hastakshep.co.in

राष्ट्रीय आंदोलन की दृष्टि से प्रेमचंद का संपादकीय साहित्य

रजत सिंह[1], **डॉ. अमृता** [2]

[1]पी-एच.डी. शोधार्थी, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश
ई-मेल: rajatsing006@gmail.com

[2]एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

सारांश

आधुनिक युग ने मनुष्य के जीवन में अनेक परिवर्तन प्रस्तावित किया। इसने ज्ञान-विज्ञान के विविध द्वार तो खोले ही, अभिव्यक्ति के लिए भी विभिन्न रास्ते प्रस्तुत किए। गद्य का आविर्भाव हुआ, छापाखाने खुले, नए विचारों का जन्म हुआ, नए पाठक वर्ग का अस्तित्व सामने आया । इस नयी स्थिति में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि पत्रकारिता का जन्म भी था। भारत में आधुनिकता का संबंध नवजागरण और साम्राज्यवादी शासन से है। इस स्थिति ने भारतीयों के अंदर उत्सुकता,उत्तेजना और उर्वरता का संचार किया । इस उत्सुकता, उत्तेजना और उर्वरता को व्यापक एवं वृहद बनाने के लिए उस युग के नेताओं ने अभिव्यक्ति के माध्यम हेतु पत्रकारिता को चुना।

अंग्रेजी साम्राज्य और उनके द्वारा लागू की गई शिक्षा प्रणाली ने भारत के सांस्कृतिक परिवेश में व्यापक बदलाव किए। यह बदलाव भी दो तरफा था। एक तरफ इस बदलाव को फैशन की तरह अपनाया गया, भारतीयता की उपेक्षा की गई। दूसरी तरफ इस नयी दृष्टि से, यूरोप के ज्ञान, उसकी राजनीति, शिक्षा, विज्ञान से भारतीयता को देखने एवं तलाश करने की कोशिश की गई। यहाँ अपनी परंपरा को नई पहचान, नया अर्थ देने का प्रयास किया गया। इस पद्धति और प्रक्रिया ने नए भारत के निर्माण की आधारशिला रखी। इसके आरंभिक प्रतिनिधि राजा राममोहन राय थे।

बीज-शब्द: *भारतीय नवजागरण, सामाजिक प्रगति, पत्र-पत्रिकाएँ, समाचार-पत्र, दमनात्मक कदम, भारतेंदु युग, आधुनिक हिंदी, स्वराज्य, ब्रिटिश शासन, आदि।*

प्रस्तावना

भारतीय लोग ब्रिटिश शासन से तो पीड़ित थे ही, ब्रिटिश शासन ने भारतीयों के अंतर्निहीत विरोधाभासों को भी सामने ला दिया था। जाति भेद,समाज में महिलाओं की स्थिति, स्त्री शिक्षा, सती प्रथा, विधवा पुनर्विवाह,छुआ-छूत, पुरोहितवाद, पुरातनपंथी सोच आदि अनेक समस्याओं, प्रथाओं की सीधी टकराहट आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और चिंतन से हो रहा था। मध्य वर्ग के उदय ने इस टकराहट में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। भारतीयों की राजनीति चेतना का प्रसार हो रहा था। मानवता के विचारों को लेकर हमारी सोच को आधुनिक विचारकों एवं उनके विचारों ने निर्देशित करने का कार्य किया। तमाम सुधारों और भारतीय नवजागरण के प्रणेता राजाराम मोहन राय और उनके सहयोगी द्वारकानाथ टैगोर ने यह अनुभव किया कि तमाम सुधारों को गति देने में प्रेस की भूमिका महत्त्वपूर्ण होगी। इसी कारण उन्होंने हिंदी, फारसी, बँगला,अंगरेजी में कई पत्र–पत्रिकाएँ निकाली। इसके पीछे की मूल दृष्टि के बारे में राजा राममोहन राय ने लिखा था, “मेरा उद्देश्य मात्र इतना ही है कि जनता के सामने ऐसे बौद्धिक निबंध उपस्थित करूँ जो उनके अनुभव को बढ़ाएँ और सामाजिक प्रगति में सहायक सिद्ध हों। मैं अपनी शक्ति-भर को उनकी प्रजा की परिस्थितियों का सही परिचय देना चाहता हूँ और प्रजा को उनके शासकों द्वारा स्थापित विधि व्यवस्था से परिचित कराना चाहता हूँ ताकि शासक जनता को अधिक से अधिक सुविधा देने का अवसर पा सकें और जनता उन उपायों से अवगत हो सके जिनके द्वारा शासकों से सुरक्षा पायी जा सके और अपनी उचित माँगे पूरी करायी जा सकें।”[1]

आरंभिक पत्रकारिता अपने उद्देश्य में काफी व्यापक थी । वह सामाजिक प्रगति से ओत-प्रोत तो थी ही, शासन और जनता के बीच सेतु – संबंध का कार्य भी करना चाहती थी। लेकिन अंग्रेज इन सद्इच्छाओं के प्रति भी शंकालु थे। वे इसमें भी कोई-न-कोई साजिश देखते